www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वृक्ष संपदा घटने न दें

---ब्रह्मवर्चस्

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

SHRI SANDIPBHAI PATEL,
MOHADEL, GUJARAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वृक्ष सम्पदा को घटने न दें

वृक्ष-वनस्पतियों और पशु-पक्षियों समेत मनुष्य हरीतिमा के आधार पर जीवित रहते हैं। पशु घास खाते हैं और पेड़ों के पत्ते चरते हैं। मनुष्य का आहार अन्न के दाने, शाक, फल व वनस्पति हैं। यह खाने को न मिले तो जीवित रहना सम्भव नहीं। मांसाहारी भी—शाकाहारी—प्राणियों का ही मांस खाते हैं। इस प्रकार जीवन की निर्भरता घास स्तर की तथा वृक्ष स्तर की वनस्पतियों पर ही निर्भर माना गया है। उसके उत्पादन और संरक्षण का पूरा ध्यान रखा जाय, तभी आवश्यकता की पूर्ति संभव है।

वृक्ष दिन भर आक्सीजन उगलते रहते हैं और प्राणियों के साँस द्वारा छोड़ी हुई कार्बनडायऑक्साइड को निगलते हैं। इसलिए उन्हें नीलकंठ की उपमा दी गयी है। आग लगने तथा कारखानों से विषैली वायु निकालने का वायु प्रदूषण प्रायः वनस्पति द्वारा ही शोधित किया जाता है।

वृक्षों का चुम्बकत्व आकाश से बादलों को खींचता है और बरसने के लिए विवश करता है। जिन क्षेत्रों के वृक्ष कट जाते हैं, वहाँ वर्षा का अनुपात भी बहुत कम हो जाता है। लीबिया अब से १०० वर्ष पहले हरीतिमा से भरा हुआ था। तब वहाँ वर्षा भी खूब होती थी और घास के सहारे पशु भी पलते थे। इस बीच वहाँ के जंगल कट गये। कीमती लकड़ी योरोप चली गई। वीरान क्षेत्र में वर्षा बन्द हो गई और बहुत बड़ा इलाका रेगिस्तान बन गया। इस अभाव के कारण वहाँ कितनी दरिद्रता बढ़ी होगी, इसका अनुपात सहज ही लगाया जा सकता है।

वृक्षों की जड़ें जमीन में गहरी जाती हैं और वर्षा के प्रवाह में बह जाने से उसे रोके रहती हैं। वृक्ष न हों तो वर्षा का पानी न तो जमीन के भीतर रुकेगा और न पकड़ के अभाव में मिट्टी यथा स्थान टिकी रहेगी, बह कर नदी नालों में चली जायेगी और भूमि की उपजाऊ ऊपर वाली परत न रहने पर न तो कृषि ठीक तरह फसल देगी और न जमीन में घास-पात उगेगी। मिट्टी वर्षा के पानी के साथ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बह कर जब नदी–नालों में जाती है, तो उनकी सतह पर ऊपर उठती जाती है। गहराई कम होने पर पानी समतल भूमि में फैलता है और बाढ़ आने की स्थिति बन जाती है। इस बाढ में फसल बह जाती है और खेत कहीं से कहीं जा पहुँचते हैं, बालू-रेत से भर जाते हैं।

यह हानियाँ साधारण नहीं, असाधारण हैं। इसके अतिरिक्त एक और भी बड़ी बात है, कि हरीतिमा का मानसिक स्तर पर भी बडा प्रभाव पड़ता है। प्राचीन काल के ऋषि-तपस्वी अपनी भावचेतना को उच्चस्तरीय बनाये रखने के लिए सघन वनों में रहते थे। वृक्ष रहित क्षेत्रों में मनुष्यों की मनोवृत्ति नीरस और दुष्ट हो जाती है और वहाँ अपराध, विग्रह अपेक्षाकृत अधिक होने लगते हैं।

वृक्षों की जड़ें नीचे जमीन में जाती हैं, तो अपनी पकड़ के कारण वर्षा का पानी उस भूमि में रोके रहती हैं, फलतः उस क्षेत्र में उगने वाले पेड़-पौधों को खुराक मिलती रहती है। यदि पेड़ न हों तो समतल भूमि का पानी सरपट से बह कर नदी-नालों में चला जाता है। जमीन एक-दो महीने में ही सूख जाती है। सर्दी के दिनों तथा गर्मी में पेड़-पौधों की जड़ें प्यासी रह सकती हैं फलतः वे सिचाई का विशेष प्रबन्ध होने पर भी जीवित नहीं रहते हैं, अन्यथा प्राकृतिक रूप से उनका पालन-पोषण बन्द हो जाता है।

कुओं का, झरनों का, तालाब-बावड़ियों का पानी तभी अधिक दिन टिकता है, जब पेड़ों की जड़ें ऊपर की सतह को गीली रखती हैं, अन्यथा कुएँ सूख जाते हैं, उनका पानी गहराई में उतर जाता है। इन कारणों से मनुष्यों और पशुओं को पानी का त्रास सहना पड़ता है।

वृक्षों के पत्ते तथा फूल टंडक के दिनों में टूट-टूट कर जमीन पर गिरते हैं। वे सूखते और सड़ते रहते हैं, उनका खाद बनता रहता है। इस प्रकार जमीन को वृक्ष ऊपर से खाद बरसाते हैं और जड़ों से दूर-दूर तक नमी रोके रहने के कारण पानी देते रहते हैं। हरीतिमा अपने आप बनी रहती है और नये पेड़-पौधें उगते-बढ़ते रहते हैं, किन्तु यदि वृक्षों को ईंधन या फर्नीचर के लिए बेहिसाब काटा जाने लगे और उनके स्थान पर नये पेड़ न उगें, तो उसके प्रतिफलस्वरूप सारे क्षेत्र की भूमि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ऊसर और खाली दीखने लगेगी। पुराने कटते चलें और नये उगाये न जायें, तो उस अभाव के कारण लकड़ी दिन-दिन कम होती चली जायेगी।

पक्षी पेड़ों पर ही रहते हैं। वे कितने ही उपयोगी काम करते हैं। एक तो यह कि फसल को नष्ट करने वाले कीड़े-मकोड़े खाते रहते हैं और फसल की क्षति बचाते हैं। दूसरे यह कि अपने पंजों और पैरों के स्पर्श से जो पराग चिपका लेते हैं, उसे अन्य पेड़ पर बैठते समय मादा जाति के फूलों पर छिड़क देते हैं। फलस्वरूप उनको अच्छी तरह फलने का अवसर मिलता है। यदि पक्षी इस कार्य को न करें तो नर पराग के अभाव में उनका फलना रुक जायगा। छोटे फूल-पौदों का पराग-प्रत्यावर्तन मोरों, तितलियों, मधुमक्खियों द्वारा होता है। इसलिए फूलने के बाद वे फल और बीज भी देते हैं। यह कार्य पेड़ों के फूलने के समय पक्षी करते हैं। उनके फलने का बहुत कुछ श्रेय इन पक्षियों को ही है। पक्षी पेड़ों पर ही घोंसले बनाते हैं। वे दूर-दूर तक उड़ते हैं और अपनी बीट के साथ इन पर्वतीय एवम् सुनसान क्षेत्रों में बीज गिरा देते हैं। फलतः उन क्षेत्रों में भी हरीतिमा उगने लगती है, जहाँ मनुष्य का आवागमन नहीं होता। समुद्री टापुओं में जो वृक्ष-वनस्पति पायी जाती है, उसे पक्षियों द्वारा बोया गया ही समझना चाहिए।

अन्य पशु पेड़ों की छाया में ही सर्दी, गर्मी और वर्षा की भयंकरता से अपना बचाव करते हैं। इसलिए पेड़ न केवल पक्षियों के लिए, वरन् पशुओं के लिए भी आश्रय-स्थल है। हिरन, लोमड़ी, खरगोश, सियार आदि जंगलों में ही खुराक एवं आश्रय प्राप्त करते हैं। उनके मल-मूत्र, हड्डी, चमड़ा आदि से वन-प्रदेश को कीमती खाद मिलती है और वह क्षेत्र सदा हरा-भरा रहता है। वन्य पशु जहाँ अपनी खुराक जंगलों से प्राप्त करते हैं, वहाँ बदले में उस क्षेत्र को कीमती खाद भी देते रहते हैं।

सभी विचारशील देशों में प्रायः एक तिहाई जमीन वन लगाने के लिए छोड़ी जाती है। वे जानते हैं कि लकड़ी के लोभ में यदि उस क्षेत्र की सफाई कर डाली गयी और खेत बना लिये गये, तो इस छोटे लाभ के बदले जो हानि उठानी पड़ेगी, वह कहीं अधिक होगी। जमीन की मिट्टी बह जायेगी और वहाँ खड्डे-खंदक पड़ जायेंगे। जिनमें चोर डाकू मजे में आश्रय प्राप्त करते रहें। जमुना और चम्बल के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इर्द-गिर्द पेड़ों को लगाने या बढ़ाने का प्रयत्न नहीं किया गया, फलतः किनारों के आस-पास ही लाखों एकड़ जमीन खड्ड-खंदकों से भर गयी और उन इलाकों में छिपने की सुविधा होने के कारण डाकुओं की असाधारण बढ़ोत्तरी हो गई। उनके भय से खुशहाल किसान और व्यापारी जान बचाने के लिए शहरों में चले गये।

दुधारू पशुओं को जंगल-चरागाह में चरने भेजते रहने की सुविधा होने पर एक ग्वाला बीसियों पशुओं को चरा लेता है और उनके लिए खुराक की अतिरिक्त व्यवस्था नहीं करनी पड़ती। जहाँ यह सुविधा नहीं है, वहाँ घर बाँध कर जानवर पालने पड़ते हैं और खरीदा हुआ चारा लेने पर वे बहुत महँगे पड़ते हैं। ठाली ? पशुओं एवम् बच्चे, जानवरों का परिपालन तो एक प्रकार से अति कठिन ही हो जाता है। फलतः वे कसाई के यहाँ चले जाते हैं। इस प्रकार पशु घटते जाने से बैल-गाय आदि सभी की कीमतें बढ़ती हैं और दूध-घी जैसे खाद्य पदार्थों के दाम आकाश चूमने लगते हैं। गरीबों के बच्चे इतना मँहगा दूध न पा सकने के कारण अत्यन्त दुबले रह जाते हैं और अकाल मृत्यु का शिकार बनते हैं। यदि जंगल चरागाह बने रहते, तो पशुओं की इतनी कमी न पड़ती। दूध के अभाव में बच्चों को दुर्बलता, रुग्णता और अकाल मृत्यु का ग्रास न बनना पड़ता।

कलकत्ता यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चर के डॉ० टी० एम० दास वनस्पतिशास्त्र के विशेषज्ञ हैं. उनके अनुसार एक वृक्ष अपने ५० वर्ष के जीवनकाल में जितनी सेवा करता है, उसकी कीमत पैसे में जोड़ने पर पन्द्रह लाख से भी अधिक आती है। एक वृक्ष ५० वर्ष की अवधि में ढाई लाख रुपये की ऑक्सीजन देता है। भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ाने में ढाई लाख रुपये के बराबर की खाद जितनी सहायता करता है, प्रदूषण नियन्त्रण के रूप में वायु-प्रदूषक अवयवों की मुफ्त सफाई पांच लाख रुपये के बराबर करता है। आर्द्रता रोकने, वर्षा करने तथा खाद्य प्रोटीनों की कीमत जोड़ने पर भी ५० वर्ष की अवधि में लगभग पांच लाख रुपये की राशि आती है। १५ लाख रुपये के बराबर वृक्ष की परोक्ष सेवाओं का मूल्यांकन करके सामान्यतया लकड़ी एवम् फलों से प्राप्त होने वाले कुछ सौ रुपये के रूप में उसकी कीमत आँकी जाती है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यह तो एक वृक्ष की बात हुई। प्रकृति प्रदत्त वृक्ष-सम्पदा से मिलने वाले कुल भौतिक अनुदानों के लेखा-जोखा लेने पर ज्ञात होता है, कि जितनी सेवा ये वृक्ष मुफ्त करते हैं, उतनी शायद मनुष्य भी न करता हो। प्राप्त आँकड़ों के अनुसार अपने देश में कुल भू भाग के २३ प्रतिशत क्षेत्र में वन हैं, जबकि पर्यावरण संतुलन एवम् देश के आर्थिक विकास के लिए कुल क्षेत्रफल का एक-तिहाई भाग वनों से आच्छादित रहना आवश्यक है। भारत के वन-क्षेत्र २ लाख ७४ हजार वर्ग मील में फैले हुए हैं, जो ३८ खरब ७८ अरब ११ करोड़ २९ लाख ६० हजार वर्ग फीट के लगभग आता है। वर्ग फुटों में पेड़ों को गिना जाय, तो भारत के २३ प्रतिशत भूभाग में फैले कुल वृक्षों की संख्या १९ अरब ३९ करोड़ ५ लाख ६४ हजार ८ सौ होती है। एक वृक्ष ५० वर्ष की अवधि में ढाई लाख रुपये की आक्सीजन, ढाई लाख का उर्वरक, पाँच लाख रुपये के बराबर प्रदूषण निवारण तथा पाँच लाख रु० की वर्षा कराने जैसी उपलब्धियाँ प्रस्तुत करता है।

पर्यावरण सन्तुलन के लिए कुल भू भाग के क्षेत्रफल का ३३ प्रतिशत वृक्ष-वनस्पतियों से ढँका होना चाहिए। कभी देश की ७० प्रतिशत भूमि वनों से आच्छादित थी। कटते-कटते वह मात्र २२ प्रतिशत अवशेष बची है। अनिवार्य-पर्यावरण सन्तुलन-सीमा से भी यह ११ प्रतिशत कम है। दूसरे प्रगतिशील देशों ने कड़ाई के साथ वन-सम्पदा को नष्ट करने पर रोक लगा दी है। फिनलैण्ड में अब भी ६६ प्रतिशत भूमि में वन हैं। जापान जैसे औद्योगिक राष्ट्र जहाँ कि ईंधन की अधिक आवश्यकता उद्योगों के लिए पड़ती है, में भी ६२ प्रतिशत क्षेत्रफल पेड़-पौधों से हरा-भरा है। रूस के कुल क्षेत्रफल के ३४ प्रतिशत तथा अमेरिका में ३३ प्रतिशत भाग में वन हैं। सर्वाधिक अदूरदर्शिता का परिचय अपने देशवासियों ने दिया है। अन्धाधुन्ध वृक्षों की कटाई के कारण असन्तुलन की स्थिति उत्पन्न हो गई। इस स्थिति को कड़ाई से रोकना होगा तथा संतुलन के लिए वृक्षारोपण जैसे पुनीत भौतिक और आध्यात्मिक लाभ देने वाले कार्य को अविलम्ब आरंभ करना होगा।

एक वृक्ष काटने से अधिक से अधिक एक हजार रुपये कीमत की जलाऊ तथा अन्य निर्माण योग्य लकड़ी प्राप्त होती है, किन्तु उसके बने रहने से प्रतिवर्ष ३०

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हजार की स्वच्छ आक्सीजन, उर्वरक, पानी और वायु प्रदूषण निवारण का लाभ प्राप्त होता है। कटाई का अर्थ होगा लम्बे समय तक प्रतिवर्ष ३० हजार रुपये के लगभग का जो योगदान प्रकृति संतुलन के रूप में मिल सकता था, उससे वंचित रह जाना।

वृक्षों की उपयोगिता और महत्वपूर्ण भूमिका का रहस्य उद्घाटन वैज्ञानिक विकास के समय हुआ। विश्व के मूर्धन्य वनस्पतिशास्त्री पर्यावरण विशेषज्ञ अब एक स्वर से स्वीकार कर रहे हैं, कि वृक्ष सम्पदा पर समस्त मानव-जाति का अस्तित्व टिका हुआ है। ये प्रकृति के सर्वश्रेष्ठ प्रहरी हैं, जिनके न रहने से प्राणि-समुदाय का जीवन संकट में पड़ जायेगा। प्रगतिशील देशों ने इस तथ्य को समझा है, कि अपनी वन सम्पदा को बचाने एवम् बढ़ाने के लिए हर तरह के कारगर उपाय सरकारी एवम् गैर-सरकारी स्तर पर आरम्भ कर दिये हैं।

एक व्यक्ति के जिम्मे १२ वृक्ष आते हैं। एक तरीका यह भी हो सकता है कि हर परिवार अपने पारिवारिक सदस्यों की संख्या के हिसाब से वृक्षारोपण का दायित्व उठावें। मात्र पौधा लगाने को ही इति श्री न समझा जाय। इनमें पानी-खाद देने तथा वृक्ष के रूप में विकसित होने तक समुचित देख-रेख की जाय। देखरेख, सुरक्षा एवम् परिपोषण की व्यवस्था न बन सकी, तो श्रम का अधिकांश भाग सरकारी प्रयासों की भाँति निरर्थक चला जायेगा और अन्ततः असफलता हाथ लगेगी। प्रत्येक परिवार अपने-अपने हिस्से का दायित्व संभाल ले, वृक्ष लगाने और उसे परिपक्व स्थिति तक पहुँचाने का काम चल पड़े, तो कुछ ही वर्षों में अनिवार्य वृक्ष-सम्पदा को ३३ ./. तक पहुँचाया जा सकता है।

वैज्ञानिकों का एक और भी कथन है, कि मौसम को सुव्यवस्थित रखने में वनों की महती भूमिका है। यदि पेड़ घटते जायेंगे, तो उस क्षेत्र का मौसम गड़बड़ाने लगेगा, वर्षा घट जायेगी और सर्दी-गर्मी अधिक पड़ने लगेगी, इसका मनुष्य के शारीरिक और मानसिक दोनों ही स्वास्थ्यों पर बुरा असर पड़ता है, पशु दुर्बल होते जाते हैं और उनकी श्रम शक्ति तथा दूध देने की क्षमता घट जाती है। दुर्बल और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रोगी, मनुष्य तथा बच्चे इस असंतुलन को बर्दाश्त नहीं कर पाते, फलतः उनके लिए जीवन संकट खड़ा हो जाता है। सर्दी से बचने के लिए ईंधन जलाने की आवश्यकता पड़ती है। इस प्रकार आर्थिक दबाव का एक कारण और भी बनता है।

पूर्वजों की स्मृति में वृक्ष लगाना एक उच्च कोटि का श्राद्ध-तर्पण माना गया है। कोई माननीय व्यक्ति हमारे यहाँ आते हैं, तो उनके हाथों वृक्ष आरोपण की प्रथा है। इस प्रकार विवाह, पुत्र-जन्म, परीक्षा में उत्तीर्ण होने, कोई आर्थिक लाभ होने के उपलक्ष में वृक्ष लगाने का पुण्य कृत्य किया जाय, तो बहुत सराहनीय समझा जायेगा।

औसत आवश्यकता के अनुसार ११ प्रतिशत वन क्षेत्र अपने देश में कम है। इसकी पूर्ति तब हो सकती है, जब हर आदमी १२ पेड़ लगाये। इसके लिए अपनी जमीन हो, तो सर्वोत्तम, न हो, तो सरकारी सड़कों के सहारे, रेलवे लाइन के समीप जहाँ बेकार जमीन पड़ी हो, वहाँ अपने श्रम से पेड़ लगाये जा सकते हैं, उनका स्वामित्व सरकारी रहे, तो भी हर्ज नहीं। ऊसर भूमि कितनी ही जगह पड़ी है। ग्रामपंचायतों से पूछ कर खाली जगह का इसके लिए प्रयोग किया जा सकता है। वन प्रदेशों में जहाँ लोगों ने पेड़ काट तो लिए हैं, पर फिर लगाये नहीं, वहाँ जाकर लगाने का प्रयत्न किया जाय और रखवाली के लिए बाड़ लगा दी जाय। गर्मी के दिनों में सिंचाई की एक-दो वर्ष आवश्यकता पड़ती है, फिर तो उनकी जड़ें गहरी चली जाती हैं और वे स्वावलम्बी हो जाते हैं।

जो लोग स्वयं श्रम करके वृक्ष नहीं लगा सकते, वे पैसा देकर दूसरों का श्रम खरीद सकते हैं और यह कार्य दूसरों के माध्यम से करा सकते हैं। यों सरकार भी इस दिशा में कुछ काम कर रही है, पर उसी के भरोसे हाथ-पर-हाथ रख कर हमें नहीं बैठा रहना चाहिए, वरन् जन-स्तर पर भी जितना कुछ बन पड़े, अधिक से अधिक करने के लिए कटिबद्ध होना चाहिए।

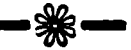

क्रमांक–२३३ । युगान्तर चेतना प्रेस शांतिकुञ्ज, हरिद्वार । मूल्य–४० पैसा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org